श्रेष्ठ कर्म

तन- मन- धन को सफल करो..
समय संकल्प की बचत करो...
मनसा में भी कोई विकल्प न हो..
हर स्वांश में हो प्रभु का नाम...
ज्ञान रत्नों की हो सदा वर्षा..
स्वप्न में भी न हो कोई अपवित्रता...
योग अग्नि हो अति प्रचंड...
पाप मिट जाए मिले न दंड...
मधुर वचनों के फूल खिले..
रूहानी प्रेम से आत्मा मिले...
कर्म में हो मानवता की झलक..
फलक से कहे हम ईश्वरीय बालक..
दिल में न हो कोई रंज...
शुभभावना हो हरेक के संग...
रिंचक मात्र भी न हो अभिमान...
मर्यादाओं में रहना हो श्रेष्ठ शान...
मालिकपन की रहे सदा स्मृति...
इंद्रियों पर रहे श्रीमत की लगाम पक्की..
मोह वश न बंधी हो कोई रस्सी...
सर्व सम्बन्ध से बुद्धि शिव हो फंसी..
भूल कर भी न हो कोई पाप..
होगा फिर धर्मराज की सजाओं से संताप...

सदा एकरस अचल हो स्व स्थिति..
कागज़ का शेर बन जाये परिस्थिति...

ॐ शांति।।